डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा सुरेंद्र वर्मा के नाटक दाराशिकोह की आख़िरी रात के कुछ अंशों की प्रस्तुति

नई दिल्ली। 4 मई 2023; आज साहित्य अकादेमी में साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें प्रख्यात हिंदी कथाकार एवं नाटककार सुरेंद्र वर्मा ने अपने नए नाटक दाराशिकोह की आख़िरी रात के कुछ अंशों का पाठ किया। तीन अंकीय इस नाटक में सात पात्रों-दारा शिकोह, औरंगज़ेब, शाहजहाँ, जहाँ आरा, रौशन आरा, ज़ेबुन्निसा, जहाँ ज़ेब के आपसी संवादों द्वारा पूरे नाटक का प्रस्तुत किया गया है। सुरेंद्र वर्मा के नाटक गहन शोध और रोचक भाषा शैली के श्रेष्ठ उदाहरण रहे हैं। नाटक औरंगजेब और दाराशिकोह की विचाराधाराओं के टकराव और उनके लिए गढ़े गए तर्कों की गहरी जाँच पड़ताल करता है। नाटक के अंतिम अंश में दारा को फाँसी देते समय औरंगजेब की आवाज गूँजती है– *शरियत कानून वा दीन को दारा से कई तरह के खतरे थे इसलिए बादशाह सलामत पाक कानून को बचाने की जरूरत और सल्तनतो निजाम की वजूहात से इस नतीजे तक पहुँचे कि दारा के और जिंदा रहने से अमन को खतरा है।* इसके बाद दारा का एक बेहद मार्मिक संवाद था, *तुम्हारे और मेरे बीच सिर्फ मैं हूँ, मुझे हटा लो ताकि सिर्फ तुम रहो।*

ज्ञात हो कि साहित्य अकादेमी, संगीत नाटक अकादेमी, कालीदास एवं व्यास सम्मान प्राप्त सुरेंद्र वर्मा का पहला नाटक सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक छह भाषाओं में अनूदित हो चुका है और इसका पहला प्रदर्शन अमोल पालेकर के निर्देशन में मराठी में 1972 में हुआ था। इसी पर अनाहत फिल्म भी केंद्रित है। उनके उपन्यास मुझे चाँद चाहिए को साहित्य अकादेमी पुरस्कार 1996 में दिया गया था इस पर भी एक धारावाहिक का निर्माण किया गया था। सुरेंद्र वर्मा के पाँच उपन्यास और 11 नाटक प्रकाशित है।

कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक हिंदी अनुपम तिवारी ने किया तथा उपसचिव (प्रशासन–प्रभारी) ने अतिथि का अंगवस्त्रम् एवं पुस्तक भेंट करके स्वागत किया।

–के.श्रीनिवासराव